महानतम प्रवचनों में से एक (17:22-34)

अक्सर पूछे जाने वाले अति महत्वपूर्ण प्रश्नों में से कुछ इस प्रकार हैं: ''मैं कहां से आया?''; ''मैं यहां क्यों हूं?''; ''मैं कहां जा रहा हूं?'' ''विज्ञान पहले प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करता है, और फिलॉसफी दूसरे के साथ जूझती है; परन्तु केवल मसीही विश्वास के पास इन तीनों प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर हैं।''

मनुष्य के जटिल प्रश्नों के सरल स्वर्गीय उत्तर प्रेरितों 17 में, मार्स की पहाड़ी पर पौलुस के संदेश में मिलते हैं। यह संदेश केवल दस आयतों में है, और इसे दो मिनट से कम समय में पढ़ा जा सकता है; परन्तु यह नाशवान मनुष्य के द्वारा सुनाए गए सबसे महान प्रवचनों में से एक है।

इस पाठ के आसपास की परिस्थितियों पर चर्चा हम पहले ही कर चुके हैं। आइए अब इस बेहतरीन संदेश पर विस्तार से बात करते हैं।

प्रवचन (17:22-31)

अरियुपगुस (मार्स पहाड़ी) पर दो सफेद पत्थर थे। पेशी के समय, वादी एक ओर खड़ा हो जाता था और प्रतिवादी दूसरी ओर। आवाज़ ऊपर की ओर जाती है, इसलिए ये दोनों पहाड़ी के नीचे खड़े होते थे। मैं कल्पना करता हूं कि पौलुस उनमें से एक पत्थर पर या उनके निकट खड़ा होकर अथेने के बुद्धिजीवी वर्ग से बात करने के लिए तैयार था।

वह बात को आगे कैसे बढ़ाए? जैसे उसने इस्राएली कौम के साथ परमेश्वर के व्यवहारों की समीक्षा (13:17) करते हुए पिसिदिया के अन्ताकिया के आराधनालय में बात की थी वैसे वह यहां नहीं कर पाया था। थिस्सलुनीके में कोई आराधनालय न होने के कारण वह ''पवित्र शास्त्रों से उनके साथ विवाद'' भी नहीं कर पाया था (17:2), क्योंकि यहां उसके श्रोता परमेश्वर के वचन से अनभिज्ञ थे। हमें *हमेशा वहीं से आरम्भ करना चाहिए जहां लोग होते हैं।* जब यीशु को कुएं पर एक औरत मिली, तो उसने उसके साथ जल की नहीं बल्कि जीवन के जल की बात की (यूहन्ना 4:10) थी। जब पौलुस को सच्चाई के स्वयंभू खोजी मिले, तो उसने परमेश्वर और मनुष्य के बारे में सच्चाई की बात की।

''तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़े होकर कहा; हे अथेने के लोगो मैं देखता

हूं, कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े माननेवाले हो'' (आयत 22)। यूनानी शब्द का अनुवाद ''देवताओं के बड़े मानने वाले'' एक मिश्रित शब्द है जिसका अर्थ है ''भूतों से डरने वाले'' (अर्थात, जो अशुद्ध आत्माओं का भय रखते थे)। ''अशुद्ध आत्मा'' शब्द पौलुस के श्रोताओं के लिए उतना बुरा नहीं था जितना हमें लगता है; यूनानी लोग अशुद्ध आत्मा की पूजा करते थे।[1] नगर में इन भूतों को समर्पित मूर्तियों की भरमार थी, इसलिए सम्भवत: उन्होंने इस बात को न तो सराहा[2] और न ही आलोचना[3] के रूप में लिया होगा, बल्कि इसे केवल एक तथ्य माना होगा।

पौलुस ने समझाया कि उसके कहने का क्या भाव था: ''क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, कि '**अनजाने ईश्वर के लिए**' '' (आयत 23क)। बाइबल से बाहर के इतिहासकारों ने लिखा है कि अज्ञात देवताओं की वेदियां होना उस इलाके में असामान्य बात नहीं थी।[4] परगुमम में (अथेने से एजियन सागर के पार) जाकर मैंने दिमेत्र के मन्दिर के खण्डहर देखे, जहां पुरातत्व विज्ञानियों को ''अनजाने ईश्वर के लिए'' समर्पित एक वेदी मिली थी।

इन मन्दिरों के उद्‌गम के बारे में बहुत से अनुमान लगाए गए हैं। कई मामलों में, एक मन्दिर का इस्तेमाल न होने पर गिरने के कारण उसकी मरम्मत के समय उसके ऊपर लिखा हुआ परिचय मिट जाने के कारण शायद इस पर ''अनजाने ईश्वर या ईश्वरों के लिए'' लिख दिया जाता था।

वर्षों पहले हुई घटना के लिए प्रचलित व्याख्या दी जाती है। किसी देश में हैजा फैल गया था जिससे सैकड़ों लोग मर गए। यह सोचकर कि देवता नाराज़ हो गए, लोगों ने अपने हज़ारों देवताओं के सामने बलियां दीं, परन्तु कुछ लाभ न हुआ। ऐपीमिनाइड्स नामक एक बुद्धिमान व्यक्ति से सुझाव मांगा गया। ''ऐसा तो नहीं कि कोई देवता आपसे अप्रसन्न है और आप उसे नहीं जानते,'' उसने सुझाव देते हुए कहा: उन्हें अरियुपगुस नामक प्रसिद्ध मैदान के पवित्र भाग में बहुरंगी भेड़ों के एक झुण्ड को छोड़कर यह प्रार्थना करने के लिए कहा गया कि अनजाना ईश्वर जिस भेड़ की बलि चाहता है उसे स्वयं ही लिटा दे। लोगों ने जहां भी भेड़ गिरी वहां वेदी बनाकर, उस वेदी पर भेड़ की बलि देकर उसका सुझाव मान लिया।[5] हो सकता है कि पौलुस के दिनों में ''अनजाने ईश्वर'' को समर्पित उन वेदियों में कम से कम एक वेदी वहां रह गई हो।

इस वेदी की सबसे सरल व्याख्या यह हो सकती है कि कोई भी मूर्तिपूजक व्यक्ति किसी देवता को छोड़ने की बात पर इतना डरता था कि वह किसी भी देवता के लिए जो उनके लिए अज्ञात था, वेदी बनाने का अवसर गंवाना नहीं चाहता था। इस मन्दिर की वजह कोई भी हो, इससे पौलुस का उद्देश्य बिल्कुल पूरा हो गया। उस पर ''अन्य देवताओं का प्रचारक'' होने का आरोप लगा था (आयत 18) परन्तु उसने दिखाना था कि वह उस परमेश्वर का प्रचार करता है जिसके अस्तित्व को अथेने के लोग मानते तो थे, परन्तु वे उसे अज्ञानता में मानते थे। ''सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो,'' पौलुस प्रेरित ने कहा, ''मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं'' (आयत 23ख)।

आयत 23 में ''बिना जाने'' शब्द अपमानजनक लगता है। हम में से बहुत से लोगों को ''अज्ञानी'' के बजाय ''बुरा'' कहलाना सही लगेगा। परन्तु, पौलुस ने उसी शब्द का प्रयोग किया जिसका वे ''अनजाने ईश्वर के लिए'' करते थे।[6] यूनानी शब्द अगनोस्तो,[7] एक मिश्रित शब्द है जो *ग्नोसिस* (''ज्ञान'' के लिए शब्द) को *अ* (नकारने वाले उपसर्ग) के साथ मिलाता है जिसका हिन्दी में अनुवाद ''अनजाना'' हुआ है। यह ज्ञान की कमी (अर्थात, अज्ञानता) की ओर संकेत करता है। असल में, पौलुस ने कहा, ''मेरी बात ध्यान से सुनो और तुम्हें उस परमेश्वर का पता चल जाएगा जिसके बारे में तुम्हें लगता है कि उसे जाना नहीं जा सकता।''

जो कुछ परमेश्वर ने किया है

ध्यान दें कि जब पतरस ने उन लोगों से बात की जिनकी परमेश्वर के बारे में गलत धारणा थी, तो उसने उन्हें यीशु के बारे में बताने से आरम्भ नहीं किया, बल्कि उसने उन्हें परमेश्वर के बारे में बताया। संसार में किसी भी झूठे धर्म का आधार परमेश्वर के बारे में गलत विचार है। याद रखें: आपको वहीं से आरम्भ करना चाहिए जहां आपके लोग हैं, वहां से नहीं जहां आप चाहते हैं कि वे हों।

(1) परमेश्वर ने सब कुछ बनाया।

पौलुस ने परमेश्वर के अस्तित्व के दार्शनिक प्रमाण देकर आरम्भ नहीं किया। बहुत से लोग अथेने के लोगों की तरह कुछ न कुछ विश्वास रखते हैं जिसे वे ''देवता'' कहते हैं। इसके स्थान पर, पौलुस ने ''जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया'' की बात कहकर (आयत 24क) परमेश्वर के बारे में अपना संदेश वहां से आरम्भ किया जहां से पुराना नियम करता है (उत्पत्ति 1:1)।[8]

पौलुस की बातों से ग्रैंड कैनयन की विशालता, कार्लसबैद की गुफाओं का निर्माण, ऑस्ट्रेलिया में अद्‌भुत आयर्स चट्टानें, स्कॉटलैंड की हरियाली, हवाई के समुद्रतट पर विस्मित करने वाले सूर्यास्त, किसी भी महाद्वीप पर तारों से भरी रात के अद्‌भुत दृश्य मन में आते हैं। इस अहसास से कि ''यह सब कुछ परमेश्वर ने बनाया है'' मैं आश्चर्य से भर जाता हूं!

पौलुस उन्हें बता रहा था कि परमेश्वर को उन्होंने नहीं बल्कि परमेश्वर ने उन्हें बनाया; उन्होंने परमेश्वर के रहने के लिए घर नहीं बनाया, बल्कि परमेश्वर ने उनके लिए घर, अर्थात पृथ्वी को बनाया। उसकी बातों से इपिकूरी लोगों के उस भौतिक विचार को ठेस लगी जिसके अनुसार यह संसार परमाणुओं के किसी टकराव से बना।

जीवन के उद्देश्य की कोई भी सही सोच सृष्टिकर्ता के बारे में सही विचार और उसे स्वीकार करने के साथ ही आरम्भ होनी चाहिए। इस प्रकार शैतान विशेष सृष्टि की धारणा के विरुद्ध बहुत बड़ा आक्रमण करना जारी रखता है और हमें पूरे जोश से शैतान के इस झूठ का कि हमारा अस्तित्व अचानक यूं ही हो गया, विरोध करना चाहिए!

पौलुस उस परमेश्वर के बारे में बताने के लिए, जिसने सब वस्तुओं की रचना की,

आगे बढ़ा: ''वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता।[9] न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है'' (आयत 24, 25क)। पौलुस मूर्तिपूजकों के मन्दिरों के सबसे बड़े चक्रव्यूह में घिरा हुआ था। थोड़ी दूर ज्यूस का मन्दिर था, जो वहां का सबसे बड़ा मन्दिर था। नीचे चौक था, जो मूर्तियों और मन्दिरों से भरा हुआ था। ऊपर अक्रोपुलिस था जिसमें चालीस से अधिक मन्दिर थे, जिनमें अतुलनीय पार्थिनोन भी था। परन्तु, परमेश्वर को मन्दिरों की कोई जरूरत नहीं थी, वे चाहे कितने भी खूबसूरत क्यों न हों। उन मन्दिरों की बेजान और असहाय मूर्तियों की तरह परमेश्वर को इसकी आवश्यकता नहीं थी कि अथेने के लोग उसकी सेवा करें; बल्कि, उन्हें उसकी सहायता की आवश्यकता थी!

(2) परमेश्वर ने सब मनुष्यों को बनाया।

पौलुस व्यापक से विशेष की ओर मुड़ा। क्योंकि परमेश्वर ने सब वस्तुओं को बनाया, इसका अर्थ यह हुआ कि उसने हमें भी बनाया: ''वह तो आप ही सब को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है'' (आयत 25ख)। प्रारम्भिक अवस्था में वह हमें जीवन देता है; फिर हमें स्वास देकर उस जीवन को बनाए रखने के योग्य बनाता है; फिर, वह हमें वे ''सब वस्तुएं'' देता है जो जीवन के लिए आवश्यक हैं। आपको परमेश्वर की कितनी आवश्यकता है? एक लम्बी सांस खींचें। परमेश्वर ने आपको वह सांस लेने के योग्य बनाया और बिना इसके, आप मर सकते हैं। हर सांस जो आप लेते हैं, वह उस सर्वशक्तिमान की ओर से उपहार है!

फिर, परमेश्वर ''ने एक ही मूल[10] से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिए बनाई हैं'' (आयत 26क)। यहां एक ही मूल से भाव एक ही व्यक्ति अर्थात आदम से है।[11] क्योंकि परमेश्वर ने हम सब को बनाया, इसलिए हम सब का एक ही पिता है और हम सभी भाई हैं! एक बार फिर, मेरे मन में दृश्यों की बाढ़ आ गई है: तुर्की के स्कूली बच्चे फोटो खिंचवाने के लिए पोज़ दे रहे हैं, अथेने के नवयुवक जीन्स पहने घूम रहे हैं, एक बूढ़े आदमी के चेहरे से उसकी उम्र का पता चल रहा है, एक स्थानीय व्यक्ति सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहा है, एक ऑस्ट्रेलियन पड़ोसी सहायता करने को तत्पर है, एक जिप्सी परिवार रंग-बिरंगे कपड़े पहने हुए है, छोटी ऐनी अपनी मां की गोद में छुप गई है।[12] इनमें से कई तो मेरे जैसे हैं, जबकि दूसरे नहीं; परन्तु हैं ये सभी परमेश्वर के हाथ का काम!

यदि पौलुस ने पिछली टिप्पणियों में परमेश्वर के बारे में यूनानी विचार पर आक्रमण किया था, तो यहां उसने मनुष्य के बारे में यूनानी विचार पर आक्रमण किया। यूनानी लोग अपने आप को सबसे उत्तम समझते थे, जिनका मूल और सामाजिक स्थिति दूसरे सभी लोगों से भिन्न थी। वे मनुष्यजाति को दो वर्गों में बांटते थे: ''यूनानी और गंवार।'' यह सुनना उनके राष्ट्रीय घमण्ड पर प्रहार था कि परमेश्वर ''ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां [जिनमें यूनानी भी थे!] सारी पृथ्वी पर रहने के लिए बनाई हैं।''

यूनानियों के प्रति नम्रता से, कृपालु होने में वे अकेले नहीं थे। बहुत से गैर-यहूदी

गुट मनुष्य जाति को ''हमसे'' और ''उनसे'' से बना मानते थे। यहूदियों ने, ''यहूदी और अन्यजाति'' का विभाजन किया था। रोमियों में ''नागरिकों और गैर-नागरिकों'' के वर्ग थे। दुर्भाग्य से, इस प्रकार के पूर्वाग्रह की फूट उनमें अभी भी हैं जो इस बात से अनभिज्ञ हैं कि यीशु ने मनुष्यों के बीच की दीवारों को गिरा दिया (इफिसियों 2:14) ताकि हम सब ''यीशु में एक'' हो जाएं (गलतियों 3:26-28)। ''मसीह में'' और ''मसीह से बाहर'' केवल दो ही श्रेणियों का महत्व है।

(3) परमेश्वर सब बातों पर नियन्त्रण रखता है।

यह दावा करने के बाद कि परमेश्वर ''ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिए बनाई हैं,'' पौलुस ने कहा ''और उनके ठहराए हुए समय, और निवास के सिवानों को बान्धा है'' (आयत 26ख)।[13] दानिय्येल 2:21 इस आयत की अच्छी व्याख्या है: ''समयों और ऋतुओं को वही पलटता है; राजाओं का अस्त और उदय भी वही करता है; बुद्धिमानों को बुद्धि और समझ वालों को समझ भी वही देता है।'' अन्य शब्दों में, सारा नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है। न केवल उसने ठहराए हुए समय बान्धे (14:17), बल्कि राजाओं के शासनों की समय सीमा भी तय की। न केवल उसने महासागरों जैसी भौगोलिक सीमाएं ही ठहराईं, बल्कि उसने राजनीतिक सीमाएं भी निर्धारित कीं। परमेश्वर ने संसार की रचना कर इसे छोड़ नहीं दिया; वह मनुष्य के मामलों में सक्रिय था और है। यद्यपि अथेने के लोग इससे अनजान थे, परन्तु इस अज्ञात परमेश्वर ने ही उन्हें इतिहास में सम्माननीय स्थान दिलाया था![14]

मनुष्य को क्या करना चाहिए

पौलुस यह प्रकट करने के बाद कि परमेश्वर ने क्या किया था, इस बात पर आया कि मनुष्य को क्या करना चाहिए।

(1) मनुष्य को चाहिए कि परमेश्वर को ढूंढ़े।[15]

आयत 27 इन शब्दों के साथ आरम्भ होती है ''कि वे परमेश्वर को ढूंढ़ें।'' शब्द ''कि'' इस आयत को अभी तक बताई गई सच्चाइयों के साथ जोड़ता है।[16] परमेश्वर ने सब कुछ बनाया और वह सब पर नियन्त्रण रखता है ताकि हम उसे ढूंढ़ें। हमें इस संसार में कोई पदवी, सम्पत्ति या आनन्द लेने के लिए नहीं बल्कि परमेश्वर को ढूंढ़ने के लिए भेजा गया है।[17] परमेश्वर को हमारी सेवा की आवश्यकता नहीं (आयत 25), लेकिन वह हमारी संगति अवश्य चाहता है!

मैं पौलुस के अगले शब्दों से चकित हुए बिना नहीं रह सकता जिनसे अथेने के दार्शनिकों की सच्चाई सामने आई: ''कदाचित उसे टटोलकर पा जाएं तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं'' (आयत 27ख)। दार्शनिक सच्चाई की खोज में थे, परन्तु वे केवल मानवीय तर्क के सहारे अर्थात अन्धेरे में टटोल रहे थे। ऐसी ही एक बात मन में आती है जिसमें एक पार्टी में आंखें बांधकर बच्चे, ''गधे पर पूंछ लगाने''[18] की कोशिश करते हुए कमरे में इधर-उधर ठोकरें खाते हैं। आंखों पर पट्टी बांधे बिना, यह आसान होगा;

पट्टी बांधकर, तो लगभग असम्भव है। यदि ये दार्शनिक अपने घमण्ड को पी जाते और यह स्वीकार कर लेते कि अनजाने परमेश्वर ने अपने आप को प्रकट कर दिया है, तो वे अपनी आंखों पर खुद बांधी पट्टी को उतारकर देख सकते थे कि ''वह हम में से किसी से दूर नहीं।''

परमेश्वर कितना निकट है? ''हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते'' हैं (आयत 28क)। कई लोगों ने पौलुस पर स्तोईकियों के भौतिक सर्वेश्वरवाद की बात की तरह सर्वेश्वरवाद की धारणा बताने का आरोप लगाया है। परन्तु, एक अवैयक्तिक शक्ति की धारणा जो बाइबल की एक व्यक्तिगत, सार्वभौमिक परमेश्वर जिससे आकाश और पृथ्वी भरे हुए हैं, जो ''सब वस्तुओं को [जिसमें हम भी शामिल हैं] अपनी सामर्थ के वचन से सम्भालता है'' (इब्रानियों 1:3) की बात में स्तोइकी धारणा से बहुत अन्तर है।[19]

यह जानते हुए कि एक ऐसे परमेश्वर की बात जो उनके निकट है, स्वीकार करना उन्हें कठिन लगा, पौलुस ने ध्यान दिलाया कि उनके अपने लेखक उसकी बात से सहमत थे: ''जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, कि हम तो उसी के वंश भी हैं'' (आयत 28ख)। पौलुस ने दो कवियों को उद्धृत किया। उसकी पहली बात वर्षों पूर्व एपिमिनाइड्स को समर्पित एक कविता में कही गई थी।[20] (लगभग 600ई.पू.): ''तुझी में हम जीते और चलते-फिरते और स्थिर रहते हैं।'' दूसरा उद्धरण, ''हम भी उसका वंश हैं,'' स्पष्टत: अरतुस के लेखों में से था[21] (जन्म 310ई.पू): ''क्योंकि हम सचमुच उसके वंश हैं।''[22] यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि इन कविताओं में ईश्वर का नाम वह यहोवा (जो उनके लिए ''अज्ञात'' था) नहीं, बल्कि उनका प्रधान देवता, ज्यूस था।[23] पौलुस यह नहीं कह रहा था कि वे यहोवा को ही ज्यूस समझें। बल्कि, वह यह कह रहा था कि मनुष्य की फिलॉसफी भी उस निकट, व्यक्तिगत परमेश्वर की धारणा की ओर ले जाती थी, और इसलिए, सच्चे परमेश्वर के बारे में उसकी बातों को असंगत नहीं मानना चाहिए।

(2) मनुष्य को उसकी आराधना सही ढंग से करनी चाहिए।

अनजाने परमेश्वर के स्वभाव की बात कहने के तुरन्त बाद, पौलुस उस एक सच्चे परमेश्वर की आराधना की बात करने लगा। हमारा परमेश्वर की आराधना करना हमेशा इस पर आधारित होता है कि हम उसके बारे में क्या सोचते हैं।

पौलुस ने आराधना के विषय पर पहले भी बहुत बार बात की थी। अपने पाठ के आरम्भ में, उसने ध्यान दिलाया था कि वे अनजाने परमेश्वर की आराधना ''बिन जाने'' करते थे (आयत 23)। उसने ज़ोर दिया था कि परमेश्वर ''हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथ की सेवा लेता है'' (आयतें 24, 25)। उसकी बातों से कि एक परमेश्वर ने सबको बनाया (आयतें 25, 26), यह निष्कर्ष निकलेगा कि मनुष्य को चाहिए कि वह केवल परमेश्वर की आराधना करे, और उसकी आराधना एक ही ढंग से करे। अब, ऐसा न हो कि अथेने के वासी पौलुस की बातों का अर्थ ही न समझे हों, इसलिए पौलुस ने उनकी मूर्तिपूजक पद्धतियों के हृदय में कटार चुभो दी: ''सो परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं, कि ईश्वरत्व,[24]

सोने या रुपये या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों'' (आयत 29)। निम्न (अर्थात मनुष्य) उच्च (अर्थात परमेश्वर) को कैसे बना सकता था। फिर, यदि हमें जो जीवित और सांस लेते और चलते-फिरते हैं, परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया है, यह कैसे सोच सकते हैं कि परमेश्वर कठोर, बेजान, निष्क्रिय पदार्थ हो सकता है ?

यह एक साहसपूर्ण, परन्तु परिणामों के प्रति लापरवाह होकर कही गई बात थी।[25] हर एक अथेनी के पास सोने या चांदी की अपनी छोटी सी मूर्ति होती थी, जबकि नगर संगमरमर से बनी भव्य मूर्तियों से भरा पड़ा था जिनमें संगमरमर पर कीमती हाथी दांत और सोने से बनी अथेना की मूर्ति भी शामिल थी।

(3) मनुष्य मन फिराए।

निर्भीक होकर पौलुस निष्कर्ष देने लगा। यदि उसकी बातें सही थीं, तो अथेने के अन्धविश्वासी गलत थे; और यदि वे उस एक, सच्चे और जीवते परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते थे तो बदलने के सिवाय उनके पास कोई और चारा नहीं था: ''इसलिए परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है'' (आयत 30)। तीसरी बार, पौलुस ने ''अज्ञानता'' के लिए यूनानी शब्द का इस्तेमाल किया: (1) परमेश्वर को ''अनजाना'' कहकर अथेनियों ने उसके बारे में अपनी अज्ञानता को स्वीकार किया था (आयत 23)। (2) वे उसकी आराधना ''बिना जाने'' करते थे (आयत 23)। (3) अब, पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ने बीते समयों में उनकी ''अज्ञानता'' को सहन किया था, परन्तु अब नहीं करेगा। परमेश्वर स्वयं को उन पर प्रकट कर रहा था; अब उनके पास अज्ञानता का कोई बहाना नहीं बचा था।[26]

कुछ टीकाकार इस प्रश्न पर बहस करते हैं कि ''परमेश्वर ने किस सीमा तक उनकी अज्ञानता की अनदेखी की ?'' मैं परमेश्वर के मन की बात नहीं जानता (यशायाह 55:8, 9) इसलिए इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता। फिर, क्योंकि पौलुस ने संकेत दे दिया कि परमेश्वर अब अज्ञानता की अनदेखी नहीं करता, तो मुझे इस प्रश्न का उत्तर देने की आवश्यकता नहीं है; इसका इस बात से कोई सम्बन्ध नहीं है कि परमेश्वर आज मनुष्यजाति के साथ कैसे व्यवहार करता है। इसलिए, मैं संतुष्ट होकर इसी प्रकार का एक चित्र बनाता हूं: जब मेरी बेटियां छोटी थीं, तो मैं उनकी कुछ बातों को अनदेखा कर देता था, जबकि उनके बड़े होने पर मैं उन बातों को अनदेखा नहीं करता। पुराने समय में, जब मनुष्यजाति शैशवकाल में थी, तो परमेश्वर ने भी उसकी कुछ बातों को अनदेखा कर दिया जिन्हें वह अब अनदेखा नहीं करता (नोट मत्ती 19:8, 9)। अब परमेश्वर सम्पूर्ण मनुष्यजाति से कहता है, ''तुम्हें इस पृथ्वी पर रहते बहुत देर हो गई है, इसलिए तुम्हें पता चल जाना चाहिए कि क्या सही है और क्या गलत; इसलिए मैं तुम्हारे कामों के लिए तुम्हें ज़िम्मेदार ठहराता हूं''!

पतरस के इस सुझाव से कि अपने आप में धर्मी महासभा को मन फिराने की आवश्यकता थी (5:31) ''वे जल गए और उन्हें मार डालना चाहा'' (5:33)। अब पौलुस ने आत्म-संतुष्ट दार्शनिकों पर अंगुली उठाई और उन्हें बताया कि बड़े-बड़े दिमाग़

वाले लोगों को मन फिराने की आवश्यकता है! ''मन फिराने'' का अर्थ है ''सच्चे मन से पाप से दुखी होकर जीवन को बदलने का दृढ़ निश्चय करते हुए, पाप के बारे में अपने मन या व्यवहार को बदलना।''[27] विशेषकर, पौलुस के श्रोताओं को ''मूरतों से परमेश्वर की ओर'' (1 थिस्सलुनीकियों 1:9) फिरने की आवश्यकता थी।

पौलुस के दिनों में पश्चात्ताप की बहुत आवश्यकता थी, और यह आज हमारे समय में भी सबसे बड़ी आवश्यकता है। *व्हटएवर बिकेम ऑफ़ सिन?* नामक पुस्तक में कार्ल मनिंगर, एम. डी., ने लिखा:

> भविष्यवक्ताओं तथा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले [प्राचीन समय के प्रचारकों] की तरह आज कल बहुत कम कलर्जीमेन ऐसे हैं जो लोगों को पश्चात्ताप करने के लिए कहने का जोखिम उठाते हैं। ... वे डरते हैं कि कहीं लोग उल्टा (कुछ चरमपंथियों की तरह) उन्हें ही आग व गंधक का अभिशाप न देने लग पड़ें। उन्हें इस आरोप से इतना डर लगता है कि वे तब भी अपना मुंह नहीं खोलते जब उन्हें लगता है कि सामने बैंच पर बैठे आदमी के लिए सुनना और उसकी ओर ध्यान देना आवश्यक है।

मनुष्यों को प्रसन्न करने वाले (गलतियों 1:10) जिन्हें मनिंगर ने ''कलर्जीमेन'' कहा है, लोगों को पश्चात्ताप करने के लिए कहने से हिचकिचा सकते हैं, परन्तु सुसमाचार प्रचारक ऐसा करने का साहस नहीं करते। जब यीशु ने प्रचार का आरम्भ किया, तो उसके मुख से निकलने वाला पहला शब्द ''मन फिराओ'' ही था (मत्ती 4:17)।

पौलुस ने अथेने के लोगों को अतीत के सम्बन्ध में बता दिया था कि परमेश्वर ने उनकी अज्ञानता की अनदेखी की थी। उसने वर्तमान के बारे में बता दिया था कि परमेश्वर ''*अब* ... मन फिराने की आज्ञा देता है।'' फिर उसने उन्हें प्रेरित करने के लिए, भविष्य के बारे में बताया: ''क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है,[28] जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा'' (आयत 31क)। इपिकूरी लोग जीवन को समाप्ति की ओर बढ़ता हुआ मानते थे, स्तोईकी लोगों का मानना था कि यह जीवन, जीवन देने वाली उस दैवीय शक्ति में समा जाएगा, लेकिन विलियम बार्कले की पुस्तक *द ऐक्ट्स ऑफ़ द अपोस्टल्ज़* के अनुसार पौलुस ने ऐलान किया कि यह जीवन ''परमेश्वर के न्याय तक जाने के लिए एक यात्रा'' है। पौलुस ने यह दिखाने के साथ आरम्भ किया था कि अनजाने परमेश्वर ने उन्हें बनाया; और उसने इस पुष्टि के साथ समाप्त किया कि वह अनजाना परमेश्वर उनका न्याय करेगा!

''परमेश्वर और मनुष्य के बारे में सच्चाई'' पर पौलुस का आरम्भिक प्रवचन मूलत: पूरा हो गया था। बिना किसी आयत का हवाला दिए, पौलुस ने शास्त्र के अनुसार एक के बाद एक तर्क प्रस्तुत किये थे। परन्तु, उसे ''यीशु के विषय में सच्चाई'' पर अपना अतिमहत्वपूर्ण पाठ अभी आरम्भ करना था। उसने ऐलान किया कि परमेश्वर ''*उस मनुष्य* के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है'' (आयत 31ख)। वह ''मनुष्य'' यीशु

ही था। यीशु के पुनरुत्थान से कई उद्देश्य पूरे हो गए,[29] इनमें से कम परिचित उद्देश्य यह है कि इससे यह प्रमाणित होता है कि न्याय होगा! (साम्प्रदायिक कलीसियाएं उसके पुनरुत्थान के दिन को मनाते समय शायद ही न्याय के दिन का प्रचार करती हों!) पौलुस को इस प्रतिष्ठित सभा के सामने बुलाया गया था क्योंकि उसने यीशु और उसके जी उठने का प्रचार किया था (आयत 18)। अन्त में, उसने उन दो विषयों के साथ अपनी बात पूरी करके समाप्त की![30]

पौलुस ने यीशु को उद्धारकर्ता के बजाय न्यायकर्ता क्यों कहा? उसने विश्वास करने की आज्ञा देने के बजाय, जैसा कि आमतौर पर सुसमाचार प्रवचनों में होता था, उन्हें मन फिराने की आज्ञा क्यों दी? इन बातों के लिए पौलुस के पास कोई भी कारण हो, हम इनसे तीन तथ्यों के बारे में आश्वस्त हो सकते हैं: (1) पवित्र आत्मा ने पौलुस को वही संदेश दिया जो उस विशेष समय पर उन विशेष लोगों के लिए आवश्यक था (मत्ती 10:19)।[31] (2) विशेषतौर पर पौलुस का प्रचार सुनने के लिए आने वालों (आयत 32) ने उसके अगले प्रवचन में यीशु और उसके क्रूस के बारे में सुना (1 कुरिन्थियों 2:2)। (3) आयत 30 में ''मन फिराना'' शब्द प्रेरितों के काम की पुस्तक के व इससे मिलते-जुलते पदों में ''विश्वास'' की तरह मनुष्य के पूर्ण उत्तर के लिए है। जो यह तर्क देते हैं कि उद्धार की शर्त के रूप में बपतिस्मे को अनिवार्य नहीं बताया गया, उन्हें अपनी बात पर स्थिर रहने के लिए यह तर्क देना चाहिए कि उद्धारकर्त्ता के रूप में यीशु में विश्वास लाना आवश्यक नहीं है क्योंकि अथेने की पहाड़ियों में पौलुस के प्रवचन में इसे उद्धार की शर्त नहीं बताया गया था। पवित्र शास्त्र का सम्मान करने वाले जानते हैं कि पौलुस ने उस सुसमाचार से भिन्न जिसका प्रचार उसने दूसरी जगहों में किया था, अथेने में किसी ''और ही प्रकार के सुसमाचार'' (गलतियों 1:6) का प्रचार नहीं किया। अपने पिछले पापों से उद्धार पाने के लिए, उन्हें वैसे ही सुसमाचार को ग्रहण करना था जैसे अन्य लोगों ने किया था अर्थात उनके लिए यीशु में विश्वास करना, अपने पापों से मन फिराना, अपने विश्वास का अंगीकार करना, और बपतिस्मा में गाड़े जाना ज़रूरी था (रोमियों 6:3, 4)।

ग्रहण करना (17:32-34)

पिछले एक पाठ में, हमने कहा था कि पौलुस भले मनों की तलाश में अथेने में आया।[32] यीशु ने कहा कि भले मन अच्छी भूमि की तरह हैं जो गहरी, साफ, और उपजाऊ है (लूका 8:4-15)। अथेने की भूमि का अधिकतर भाग छिछला, अन्धविश्वास और मनुष्यों के तर्कों की घास-फूस से ढका और निष्क्रिय था। लूका ने कहा, ''मरे हुओं के पुनरुत्थान की बात सुनकर कितने तो ठट्ठा करने लगे, और कितनों ने कहा, यह बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे। परन्तु कई एक मनुष्य उसके साथ मिल गए'' (आयतें 32, 34क)। सुसमाचार को स्वीकार करने के जिन तीन ढंगों को लूका ने दर्ज किया है उनमें से एक ढंग सारे संसार के लोगों द्वारा अपनाया जाता है।

कइयों ने ठट्ठा किया

पहले, ''पुनरुत्थान की बात सुनकर कितने तो ठट्ठा करने लगे'' (आयत 32क)। छिछले लोगों ने बहुत पहले ही यह खोज लिया था कि किसी नई बात को परखने से उसका ठट्ठा उड़ाना आसान है; और यह कि ''हंस कर आप, इसे अनदेखा कर सकते हैं।''

ध्यान दें कि जिस विषय से सभा में फूट पड़ी वह ''पुनरुत्थान की बात'' था। उन्होंने पौलुस द्वारा उनकी पवित्र कला के अपमान की बात बड़े धैर्य से सुनी और यह भी सहन कर लिया कि उन्हें मन फिराने की आवश्यकता है। परन्तु, जब ''नगर के बाहर के इस सीड पिकर'' ने शारीरिक पुनरुत्थान की बात की तो वे अपने आपको वश में नहीं रख पाये। फिलॉसफी के विभिन्न स्कूलों में थोड़े बहुत मतभेद तो थे, परन्तु वे इस बात पर सहमत थे कि शारीरिक पुनरुत्थान असम्भव है। आत्मा को अनश्वर कहने वाले भी शरीर को इस पृथ्वी का तथा बुरा मानते थे। वियर्सबे के अनुसार, ''एक यूनानी के लिए, देह केवल एक कैद थी; और जितनी जल्दी व्यक्ति देह को छोड़ देता, उतना ही वह प्रसन्न होता था। उस देह में फिर से रहने के लिए उस मुर्दे को फिर से क्यों जिलाया जाए?'' किसी पढ़े-लिखे यूनानी के व्यवहार को एक यूनानी लेखक के एक कथन में संक्षिप्त किया जा सकता है: ''एक बार आदमी की मृत्यु होने और धरती द्वारा उसका लहू सोख लेने के बाद, पुनरुत्थान नहीं होता।'' इस कथन में ''पुनरुत्थान'' के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द *अनस्तेसिस,* जो वही शब्द था जिसका प्रयोग पौलुस ने किया था।[33]

अरियुपगुस के ठट्ठा करने वालों की मुट्ठी में ख़ज़ाना था, परन्तु उन्होंने इसे अपने हाथों में से फिसल जाने दिया।

कई लोगों ने प्रतीक्षा की

कुछ लोगों ने पौलुस से कहा, ''यह बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे'' (आयत 32ख)। फेलिक्स की तरह, उन्होंने कहा, ''कि अभी तो जा, अवसर पाकर [हम] तुझे फिर [बुलाएंगे]'' (आयत 24:25)। क्या सचमुच उनकी दिलचस्पी पौलुस के प्रवचन सुनने में थी, या वे शिष्टता से टालमटोल कर रहे थे? मैं नहीं जानता, परन्तु मुझे इतना मालूम है कि परमेश्वर के साथ टालमटोल करना बहुत ही ख़तरनाक खेल है।[34]

कई लोगों ने विश्वास किया

इस पर पौलुस अपनी बात पर विचार करने के लिए उन्हें छोड़कर ''उनके बीच में से निकल गया'' (आयत 33)।[35] शायद वह हताश हो गया था।[36] यदि ऐसा था, तो हम अगली आयत के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं: ''परन्तु कई एक मनुष्य उसके साथ मिल गए, और विश्वास किया, जिन में दियुनुसियुस अरियुपगी था, और दमरिस नामक एक स्त्री थी, और उनके साथ और भी कितने लोग थे'' (आयत 34)। यह भरपूर फसल तो नहीं थी, परन्तु थी यह उपज क्योंकि एक प्राण की कीमत सारे संसार से बढ़कर है।

इन परिवर्तितों में एक दियुनुसियुस ''अरियुपगी'' था।[37] अरियुपगुस के सम्माननीय

न्यायालय के सदस्य को अरियुपगी कहा जाता है। दियुनुसियुस नगर के विशिष्ट लोगों में से एक था। फिर दमरिस नामक एक स्त्री थी।[38] लूका ने उसका नाम बताया, इसलिए वह कोई प्रभावशाली स्त्री भी हो सकती है और नहीं भी।[39] फिर ''कितने लोगों'' की बात आती है। लूका ने पौलुस के प्रवचन का संक्षिप्त रूप देकर स्पष्टतया अथेने में पौलुस की सेवकाई[40] तथा उस सेवकाई के फल को भी संक्षेप में ही बताया।

बहुत से टीकाकार ज़ोर देते हैं कि अथेने में किसी का बपतिस्मा नहीं हुआ था। इसका आधार वे कुरिन्थियों को लिखे पत्र में पौलुस के उस कथन को बताते हैं कि स्तिफनास का घराना, जो कुरिन्थुस में रहता था (1 कुरिन्थियों 1:14-16; 16:17) ही ''अखया के पहिले फल'' थे (1 कुरिन्थियों 16:15) (अथेने और कुरिन्थुस दोनों ही अखया के इलाके में थे)। परन्तु, यह सम्भव है, कि स्तिफनास और उसका परिवार अथेने में पौलुस के वहां रहते समय आता हो और उस समय पौलुस ने उन्हें बपतिस्मा दिया हो।[41] यह बात कि कई लोग पौलुस के साथ ''मिल गए और विश्वास किया'' अन्य नगरों में लोगों के मसीही बनने की लूका द्वारा दी गई संक्षिप्त जानकारी है (13:48; 14:1; 17:4; 17:12); यह निष्कर्ष निकालने का कोई कारण नहीं है कि प्रेरितों 17:34 में उसके कहने का अर्थ कुछ और होगा। यह सत्य है कि पौलुस ने लिखा कि ''न बहुत कुलीन'' लोग मसीही बने (1 कुरिन्थियों 1:26), परन्तु, ''न बहुत'' का अर्थ यह नहीं कि ''कोई नहीं।''

कुछ अपवादों के साथ, टीकाकार बड़ी दृढ़ता से यह मानते हैं कि पौलुस ने अथेने में कोई कलीसिया नहीं बनाई थी। उनका आधार मुख्यत: यह तथ्य होता है कि नये नियम में उस नगर की किसी कलीसिया का उल्लेख नहीं है। परन्तु, पौलुस ने, निस्संदेह बहुत सी मण्डलियों की स्थापना की जिनके नाम का उल्लेख नये नियम में नहीं किया गया है। बहुत से टीकाकारों का एक मण्डली बनाने के बारे में दृष्टिकोण साम्प्रदायिक कलीसिया की धारणा होता है। बाइबल सिखाती है कि जब कोई सुसमाचार की आज्ञा मान लेता है, तो परमेश्वर उसे कलीसिया में मिला देता है (आयत 2:47[42])। लूका ने अथेने में कम से कम आधा दर्जन ''संगठित'' या ''असंगठित'' नये मसीहियों के बारे में बताया[43] जिनसे उस नगर में कलीसिया बनी थी। (इतिहास में दर्ज है कि दूसरी सदी में अथेने में एक मजबूत मण्डली का अस्तित्व था। क्या कोई इन्कार करेगा कि उस फसल के लिए पौलुस ने ही बीज बोया था?)

काश! हमें पता होता कि अथेने में उन भले मनों का क्या हुआ, परन्तु लूका ने इसके बारे में हमें बताया नहीं। जल्द ही पौलुस पश्चिम की ओर यह देखने के लिए निकल पड़ा कि वहां की भूमि कैसी है। हम अपनी कहानी को कुरिन्थुस में ले चलेंगे।

सारांश

आनन्दित हों; उस अनजाने परमेश्वर का आज पता चल चुका है! ''उसी में हम जीवित रहते हैं, और चलते फिरते,और स्थिर रहते हैं'' (आयत 28)। अब हमें अपने स्वार्थी जीवनों को पीछे छोड़कर उसकी ओर मुड़ जाना चाहिए। ''परमेश्वर ... अब हर

जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है'' (आयत 30)। आपको नहीं लगता कि आपको मन फिराना चाहिए? तो फिर यह पाठ आप ही के लिए है!

आप इसे कैसे स्वीकार करेंगे? क्या आप ठट्ठा करेंगे जैसे उनमें से कइयों ने किया? क्या आप उनमें से कइयों की तरह टालमटोल करेंगे? या आप उन आज्ञा मानने वालों की तरह विश्वास करेंगे? याद रखें, यीशु अब आपका उद्धारकर्ता हो सकता है, बाद में वह आपका न्याय करने वाला भी होगा। परमेश्वर ने ''एक दिन ठहराया है, जिसमें वह ... धर्म से जगत का न्याय करेगा'' (आयत 31)। पुनरुत्थान से इसकी गारन्टी मिल जाती है!

प्रवचन नोट्स

आप पौलुस के प्रवचन को पहले भाग में पूछे गए प्रश्नों: (1) ''मैं कहां से आया हूं?'' (परमेश्वर ने मुझे बनाया) (आयतें 24-26)। (2) ''मैं यहां क्यों हूं'' (परमेश्वर को खोजने के लिए) (आयतें 27-29)। (3) ''मैं कहां जा रहा हूं'' (न्याय की ओर) का विभाजन करके इसे ''मनुष्य के जटिल प्रश्नों के पौलुस के स्पष्ट उत्तर'' नाम दे सकते हैं। इन विचारों को (1) मनुष्य का आरम्भ, (2) मनुष्य का उद्देश्य, और (3) मनुष्य का भविष्य भी कहा जा सकता है।

वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे ने पौलुस के प्रवचन की रूपरेखा इस प्रकार दी: (1) परमेश्वर की महानता (वह सृष्टिकर्ता है) (आयत 24), (2) परमेश्वर की भलाई (वह उपलब्ध करवाता है) (आयत 25), (3) परमेश्वर की सरकार (वह राजा है) (आयतें 26-29), (4) परमेश्वर का अनुग्रह (वह उद्धारकर्ता है) (आयतें 30, 31)।

बाइबल से बाहर के स्रोतों से उद्धृत करना

अथेने की पहाड़ी पर पौलुस का प्रवचन उसकी उच्च शिक्षा पर प्रकाश डालता है; वह सैक्यूलर कवियों की कविताओं के अंश उद्धृत कर सकता था जिनकी बातों का उसके श्रोताओं में सम्मान किया जाता था। पौलुस ने बाइबल से बाहर के लेखकों को दो अन्य स्थानों 1 कुरिन्थियों 15:33 और तीतुस 1:12 में उद्धृत किया। इन उदाहरणों से, दो निष्कर्ष निकलते हैं: (1) अपनी बात को स्पष्ट करने या कोई उदाहरण देने के लिए प्रचारक को बाइबल के बाहर से उद्धृत करने की अनुमति है। (2) इसके इतने कम उदाहरण मिलते हैं कि हम निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि यह कम से कम होना चाहिए। बाइबल के इसमें दिए गए पाठ या प्रवचन में पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और बाइबल से बाहर अन्य स्रोतों के हवालों की भरमार नहीं होनी चाहिए। यह बात ध्यान में रखी जाए: ''कि तू *वचन* का प्रचार कर'' (2 तीमुथियुस 4:2)। सुसमाचार आज भी उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है (रोमियों 1:16)।

पाद टिप्पणियां

[1]इस भाग में प्रेरितों 17:18 पर नोट्स देखिए। [2]यदि पौलुस पर मुकदमा चल रहा था, तो मुकदमे को प्रभावित करने के प्रयास में इस विशेष अदालत की सराहना करना गैरकानूनी था। [3]यह सुझाव दिया गया है कि पौलुस अपने सुनने वालों के साथ ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करके जिनका अर्थ उनके लिए कुछ और था और उसके लिए कुछ और, शब्दों का खेल खेल रहा होगा। [4]दो सैक्यूलर लेखक जिन्होंने इस चलन की गवाही दी वे दूसरी सदी का पौसानियास और तीसरी सदी के आरम्भ का फिलोस्त्रतुस थे। [5]कई यूनानी लेखकों ने यह बताते हुए लिखा है कि सुझाव मान लिया गया और प्लेग खत्म हो गया। [6]यही शब्द आयत 30 में दोबारा इस्तेमाल किया जाएगा। [7]यह वही शब्द है जिससे ''अज्ञेयवादी'' शब्द निकला है, जिसका अक्षरश: अर्थ है ''जिसे ज्ञात नहीं।'' नास्तिक कहता है, ''परमेश्वर नहीं है'' जबकि एक अज्ञेयवादी कहता है, ''मुझे नहीं मालूम की परमेश्वर है या नहीं।'' [8]इस पुस्तक में 14:15-17 पर नोट्स देखिए। [9]पौलुस के शब्द हमें सुलैमान (1 राजा 8:27) और स्तिफनुस (प्रेरितों 7:48, 49) का स्मरण दिलाते हैं। [10]यह इस आयत की सत्यता की सही प्रासंगिकता है और मेडिकल साइंस ने इसकी पुष्टि की है। व्यक्ति किसी भी जाति या मूल का क्यों न हो, उसका लहू दूसरे इन्सान के लहू के जैसा ही है। लहू के प्रकार में भिन्नताओं से जाति या मूल का कोई सम्बन्ध नहीं है।

[11]नोट उत्पत्ति 3:20. यद्यपि यह आयत हवा की बात करती है, परन्तु प्वाइंट वही है। [12]ऐनी क्रिस्टाइम का जन्म अगस्त 30, 1995 को हुआ। उसके माता-पिता जुडसोनिया चर्च ऑफ़ क्राइस्ट में, जहां मैं प्रचार करता हूं, आराधना के लिए आते हैं। इसके स्थान पर किसी स्थानीय व्यक्ति का नाम लिया जा सकता है। [13]कई लोगों ने प्रेरितों 17:26 को अतिरिक्त अर्थ देने के प्रयास किए हैं; उनका कहना है कि इस आयत का अर्थ है कि ''कि परमेश्वर ने हर मनुष्य को उसके स्थान पर रखा है, और उसे वहीं रहना चाहिए।'' परन्तु, विचार करें, कि जिस व्यक्ति ने यह बात कही वह एशिया में पला-बढ़ा, यरूशलेम में पढ़ा एक यहूदी था जो यूरोप में प्रचार कर रहा था। उसका मेल-जोल सभी प्रकार के शैक्षिक तथा सामाजिक स्तर के लोगों के साथ था। वह स्पष्टत: किसी तथाकथित ''दैवीय पूर्वधारणा'' सामाजिक या भौगोलिक ''स्थान'' में नहीं ''रहता'' था। [14]जहां भी कोई रहता है, वह यह कह सकता है कि परमेश्वर उस देश के मामलों में सक्रिय है। [15]ध्यान दें इब्रानियों 11:6 और मत्ती 7:7, 8 व्यवस्थाविवरण 4:29 भी देखिए। [16]मूल शास्त्र में आयत 27 पिछली आयतों को बड़ी सरलता से जोड़ती है; आयत 27 के आरम्भ में, ''ढूंढ़ने के लिए ...'' आता है। [17]पृथ्वी पर मनुष्य के उद्देश्य पर एक और महान वाक्य के लिए, मत्ती 5:16 देखिए। ''परमेश्वर को खोजना'' मनुष्य का आरम्भिक उद्देश्य हो सकता है; ''परमेश्वर की महिमा करना'' मनुष्य का अन्तिम उद्देश्य हो सकता है। [18]इस खेल में एक दीवार पर किसी पूंछ रहित गधे की तस्वीर रख दी जाती है। एक-एक करके, बच्चों की आंखों पर पट्टी बांध कर उन्हें कागज़ की पूंछ में पिन लगाकर दी जाती है। तीन बार उसके इर्द-गिर्द घूमने के बाद, उन्हें गधे पर पूंछ लगाने की कोशिश करनी होती है। जो बच्चा उसकी पूंछ बिल्कुल सही जगह पर लगा देता है, वह जीत जाता है। अन्य देशों में, बच्चे आंखें बांध कर इस प्रकार के कई और खेल खेलते हैं। इस उदाहरण के लिए आप अपने क्षेत्र के खेल का उदाहरण दे सकते हैं। [19]पौलुस के अगले शब्द ''कि हम तो उसी के वंश में हैं'' पूरी तरह से स्तोईकियों की सर्वेश्वरवाद की धारणा के विपरीत थे। [20]तीतुस 1:12 के उद्धरण का श्रेय आम तौर पर एपिमिनाइड्स को जाता है। एपिमिनाइड्स यूनानी दार्शनिकों में बहुत सम्माननीय था; कई यूनानी लेखकों के अनुसार तो उसे आत्मा की प्रेरणा प्राप्त थी।

[21]अरस्तु पौलुस की तरह ही किलिकिया का रहने वाला था। पौलुस ने तरसुस में अपनी आरम्भिक शिक्षा के दौरान सम्भवत: आमतौर पर अरस्तु की बातें सुनी थीं। [22]एक और कवि कलिंथस ने इसी विचार को थोड़ा सा अलग शब्दों में व्यक्त किया। [23]''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के ''पूजा से गालियों तक'' पाठ में 14:12 पर नोट्स देखिए। [24]यहां ''ईश्वरत्व'' का उपयोग *theion* का अनुवाद करने के लिए किया गया है जो विलक्षण ईश्वरीय गुणों का पता देता है। जैसे ''मनुष्यत्व'' शब्द मनुष्य के गुणों के बारे में बताता है,

उसी प्रकार ''ईश्वरत्व'' से परमेश्वर के गुणों का पता चलता है। [25]मूर्तिपूजा पर पौलुस की शिक्षा पर बाद की प्रतिक्रिया के लिए, देखिए प्रेरितों 19:23-28. [26]इसी निष्कर्ष वाले एक और हवाले के लिए, रोमियों 1:20 देखिए। [27]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में पृष्ठ 200 पर शब्दावली में देखिए ''मन फिराव।'' [28]परमेश्वर के सिवाय कोई नहीं जानता कि वह दिन कौन सा होगा (मत्ती 24:36)। [29]रोमियों 1:4; 1 कुरिन्थियों 15:20; इत्यादि। [30]दूसरे पाठ में आयत 31 का संक्षिप्त विवरण खोल कर समझाया गया होगा। परमेश्वर की नियुक्ति का यह व्यक्ति कौन था? और मुर्दों में से उसके जी उठने की परिस्थितियां क्या थीं? (एफ.एफ. ब्रूस, द बुक ऑफ ऐक्ट्स)।

[31]क्या पौलुस ने परमेश्वर की ओर से न्यायाधीश के रूप में इसलिए बात की क्योंकि वह अरियुपगुस के लोगों को बताना चाहता था कि जिस प्रकार वे उस पर दोष लगा रहे थे उन पर भी उसी रीति से दोष लगाए जाएंगे? क्या पौलुस ने मन फिराव की बात इसलिए की क्योंकि वह उनकी आत्मसंतुष्टि से भली भांति परिचित था? [32]इस पुस्तक में ''भले मनों की तलाश'' पर पाठ के अन्त में देखिए। [33]पिछले पाठ में प्रेरितों 17:18 पर नोट्स देखिए। [34]अगले भाग में ''जब मुझे समय मिलेगा'' पाठ में 24:25 पर नोट्स देखिए। [35]आयत 33 के शब्दों से यह पता चलेगा कि पौलुस अपनी इच्छानुसार स्वतन्त्रतापूर्वक आ-जा सकता था, सो सम्भवत: सामान्य अर्थ में उस पर मुकदमा नहीं था। [36]पहला कुरिन्थियों 2:1-3 से लग सकता है कि अथेने में पौलुस के अनुभवों ने उसे निराश कर दिया। [37]परम्परा के अनुसार, दियुनुसियुस अथेने की कलीसिया का बिशप (ऐल्डर) बना। हो सकता है। उसके बारे में और परम्पराएं कम हैं। आज अथेने में, एक गली का नाम उसके नाम पर है। [38]एक बार फिर लूका ने आरम्भिक कलीसिया में स्त्रियों की भूमिका पर ज़ोर दिया। [39]दमरिस की पहचान के बारे में भिन्न-भिन्न विचार हैं, कोई उसे ''असाधारण स्त्री'' और कोई ''कुलीन स्त्री'' के रूप में जानता है। अधिक मान्यता यह है कि उसने अथेने की पहाड़ी पर प्रवचन सुना, परन्तु लूका ने इसका उल्लेख नहीं किया। शायद वह परमेश्वर का भय रखने वाली औरत थी जिसने आराधनालय में पौलुस से वचन सुना। [40]हम पक्का नहीं कह सकते कि शाऊल और तीमुथियुस पौलुस से अथेने में मिले या नहीं।

[41]पौलुस के कथन की कोई और व्याख्या भी हो सकती है। कुछ टीकाकारों का मानना है कि जहां तक कुरिन्थुस की बात है वाक्यांश ''कुरिन्थुस में'' को ''अखया के पहिले फल'' की तरह समझना चाहिए। ''मत डर'' पाठ में प्रेरितों 18:8 पर नोट्स देखिए। [42]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के ''वह कलीसिया जिसका सदस्य बनना मैं प्रिय जानूंगा'' में 2:47 पर नोट्स देखिए। [43]शास्त्र ''कई एक मनुष्य [कम से कम 2] ... जिन में दियुनुसियुस अरियुपगी था [+1], और दमरिस नामक एक स्त्री थी [+1], ... और भी कितने लोग [+ कम से कम 2 और] थे'' की बात करता है।